International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(1): 63-64
Received: 12-11-2021
Accepted: 02-01-2022

डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत)
सी.एम.के. नेषनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत)
सी.एम.के. नेषनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

ललित कलाओं में संगीत का स्थान

डॉ. रंजना ग्रेवर

सार
ललित कलाओं में संगीत का स्थान सर्वोपरि है। मनोगत भावों की अभिव्यक्ति के लिए जिन माध्यमों का प्रयोग होता है, यथा–संगीत, नृत्य, चित्रकला इत्यादि, वे ही कलाएँ है परन्तु अन्य अनगिनत कलाएँ भी हैं जो भावों की अभिव्यक्ति हेतु उपयुक्त हैं, जीवनोपयोगी भी है।

कुटशब्दः संगीत, ललित कलाएं, भाव, कलाएं

प्रस्तावना
''बौद्ध–ग्रन्थों'' में कलाओं की संख्या 84 (चौरासी) दी गई है। ''प्रबन्ध–कोष'' में 72 (बहत्तर) कलाओं को गिनाया गया है। ''कला–विलास'' में 64 (चौसठ) कलाओं को स्वीकार किया है। वात्स्याय ने भी ''काम–सूत्र'' में 64 (चौसठ) कलाओं को ही स्वीकार किया है। इनमें ललित कलाओं की संख्या 12 (बारह) हैः–

1. गाना
2. बजाना
3. नाचना
4. चित्रकारी
5. काट छाँट कर आकृति बनाना
6. वीणा, डमरू आदि बजाना
7. नाटक, कहानियों का ज्ञान
8. भवन–निर्माण कला
9. विभिन्न भाषाओं का ज्ञान
10. काव्य बनाना
11. कोष–छनद आदि का ज्ञान
12. काव्य और अलंकार का कौशल

उपर्युक्त ललित कलाएँ अलौकिक आनन्द प्रदान करने वाली है।
भोजन, वस्त्र और आवास, का समाधान तो पूर्णरूपेण नहीं कर पाती परन्तु आत्म–सन्तुष्टि की पूरी माया–सम्पन्न है। यह शाश्वत सत्य है।
पाश्चात्य चिन्तकों के अनुसार ललित कलाएँ निम्नानुसार हैं–

1. Painting (चित्रकला)
2. Sculpture (मूर्त्तिकला)
3. Architecture (वास्तुकला)
4. Music (गायन + वादन)
5. Dance (नृत्य)
6. Drama (नाट्य)
7. Prose (गद्य)
8. Poetry (पद्य)

उपर्युक्त सभी कलाएँ भारतीय चिन्तन के अनुसार 'साहित्य', 'संगीत' एवं 'कला', मात्र इन तीन शीर्षकों के अन्तर्गत आ जाते हैं। यथा–'साहित्य' के अन्तर्गत दृश्य और श्रव्य–काव्य, 'संगीत' के अन्तर्गत गायन, वादन और नृत्य तथा 'कला' के अन्तर्गत वाद्यक अर्थात् चित्रकला एवं मूर्त्तिकला।
दोनों ही चिन्तनानुसार (पाश्चात्य एवं भारतीय) ललित कलाओं की संख्या 09 (नौ) ही है।
परन्तु, ललित कलाओं में संगीत को सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त होने के कई स्पष्ट कारण दृष्टिगोचर हैः–
(इसे व्याख्यान द्वारा स्पष्ट किया जाएगा।)

1. स्वर–लय जैसे सबसे सूक्ष्म उपकरण फिर भी सबसे लरित प्रभाव।
2. स्थूल उपकरण वाली वास्तु–कला, मूर्तिकला, चित्र कला से यहाँ बाणी .....
3. काव्य में अन्य भाषा–भाषी तथा पशु–पक्षी प्रभावित नहीं हो सकते।
4. कहा है।
5. वर्तमान समय में जिस प्रकार संगीत सुनने–देखने की सुविधा बढ़ रही है, उससे उसका व्याप बढ़ा है। सभी को सुलभ हो गया है।
6. नवीनीकरण की इस दिशा में विशेष सुविधा होती है।
7. संगीत द्वारा चमत्कारी प्रभाव की सम्भावना सर्वाधिक है।
8. एकता–अखण्डता का कारण स्वरूप है।
9. भावाभिव्यक्ति, आनन्दानुभूति, मोक्ष–प्राप्ति का सशक्त माध्यम है।
10. संगीत का पल–पल बदलना–गतिशीलता उसके पक्ष में जाता है।
11. महाकवि माघ ने अनन्त को समझाने के लिए 'गेय' के शब्द का सूचक प्रयोग किया है।
12. कम–से–कम सामग्री की आवश्यकता है तथा अधिकाधिक प्रभाव की सम्भावनाएँ है।
13. इस प्रकार, ललित कलाओं में 'संगीत' का स्थान सर्वोपरि है, यह सर्वग्राहय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 प्रदीप कुमार दीक्षित 'नेहरंग' द्वारा 'पुनश्चयज्ञ पाठयक्रम' का0 हि0 वि0 वि0
2. निबन्ध संग्रह, संगीत कार्यालय, हाथरस।
3. भारतीय संगीत का इतिहास – डॉ0 शरच्चन्द्र परजिये।